प्रा.डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाळ
एम्.ए.,पीएच्.डी.
अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय
वडूज, जि. सातारा (महाराष्ट्र)

— प्रमाण पत्र —

मैं प्रमाणित करता हूँ कि संतोष शंकर साळुंखे ने शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध "२० वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामीण उपन्यासों में सांप्रदायिकता" ('डूब','इदन्नमम' और 'मुखडा क्या देखे' के विशेष संदर्भ में) मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम से साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। यह उनके द्वारा संपन्न शोधकार्य ~~मौलिक रचना~~ है। पूर्व योजना के अनुसार शोधार्थी ने मेरे सुझावों का आद्यंत पालन किया है। जो तथ्य लघुशोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए है; मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह ~~रचना~~ शोधकार्य इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय में एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं ~~की गई~~ किया गया है।

स्थान — सातारा

शोध–निर्देशक

तिथि — 30 अप्रैल,2009

(प्रा.डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाळ)

– संस्तुति –

हम संस्तुति करते हैं कि संतोष शंकर साळुंखे द्वारा एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत "२० वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामीण उपन्यासों में सांप्रदायिकता" ('डूब','इदन्नमम' और 'मुखडा क्या देखें' के विशेष संदर्भ में) लघुशोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

(श्री. सुहास साळुंखे)
प्राचार्य,
लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

(प्रा.डॉ. भारत सगरे)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

LAL BAHADUR SHASTRI COLLEGE SATARA

स्थान – सातारा

तिथि – 30 अप्रैल,2009

– प्रख्यापन –

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि "२० वी सदी के अंतिम दशक के ग्रामीण उपन्यासों में सांप्रदायिकता" ('डूब','इदन्नमम' और 'मुखडा क्या देखे' के विशेष संदर्भ में) लघुशोध-प्रबंध मेरा ~~मौलिक रचना~~ अपना शोधकार्य है, जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। यह ~~रचना~~ शोधकार्य इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय में एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

स्थान – सातारा

शोध छात्र

तिथि– 30 अप्रैल, 2009

(संतोष शंकर साळुंखे)